Dr. Shyam Shankar
Associate Professor
Deptt. of Political Science
Raja Singh College, Siwan

For BA Hons. Part - II

राजनीतिक समाजीकरण के प्रकार एवं उद्देश्य

राजनीतिशास्त्र के जनक एवं प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तु ने मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी बताया है। मानव के लिए राज्य एवं समाज दोनो ही महत्वपूर्ण है। मनुष्य समाज में रहते हुए राजनीति की जानकारी प्राप्त करता है तथा राजनीतिक कार्यों मे भाग लेता है। समाज के लोगो का राजनीति के प्रति सक्रियता, जानकारी और सहभागिता को ही राजनीतिक समाजीकरण कहा जाता है।

आमण्ड और पावेल के शब्दो में "राजनीतिक समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा राजनीतिक संस्कृतियों को स्थिर रखा जा सकता है अथवा बदला जा सकता है। इस कार्य के निष्पादन द्वारा व्यक्तियों को राजनीतिक संस्कृति में सम्मिलित किया जाता है और उसके राजनीतिक विषयो के प्रति अभिमुखीकरण स्थापित होते है।"

आमण्ड और पॉवेल ने राजनीतिक समाजीकरण के चार प्रकार बताए है —

1. प्रकट समाजीकरण Direct Political Socialisation— रेडियो, टीवी, सीनेमा, समाचारपत्र-पत्रिकाएँ आदि के द्वारा जब व्यक्ति राजनीतिक मूल्यो, आस्थाओ, विश्वासो को ग्रहण करता है तो इसे प्रत्यक्ष राजनीतिक समाजीकरण कहा जाता है। आमण्ड तथा पावेल के शब्दोमे - प्रत्यक्ष राजनीतिक समाजीकरण उस समय होता है जब राजनीतिक उद्देश्य के प्रति सूचनाओ, मूल्यो, या भावनाओ का प्रकट रूप मे संचारण किया जाता है।

2. लुप्त अथवा अप्रत्यक्ष राजनीतिक समाजीकरण. Latent or indirect Political Socialisation — परिवार, रोजगार का अनुभव, अभिजात समुह, राजनीतिक अनुभव आदि ऐसे अभिकरण है जो अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक समाजीकरण करते है।

3. सादृश्य तथा निरन्तर राजनीतिक समाजीकरण Homogeneous and continuous Political Socialisation — इसमे व्यक्ति परस्पर

Scanned with CamScanner

सहयोग और विश्वास के आधार पर राजनीतिक व्यवस्था का सहयोग देकर उसे स्थायित्व प्रदान करते हैं। परन्तु ये शान्तीपूर्ण साधनो से धीरे धीरे परिवर्तन लाना पसन्द करते हैं।

4. असमान तथा बाधित राजनीतिक समाजीकरण Heterogeneous and discontinuous Political Socialisation — इस व्यवस्था मे व्यक्तियों और समुहो मे परस्पर अविश्वास, घृणा, संदेह होता है जिससे वे राजनीतिक प्रणाली से असंतुष्ट रहते है। इसलिए परिवर्तन या क्रान्ती हो जाती है जिससे शासन व्यवस्था छिन्न भिन्न या समाप्त हो जाती है।

राजनीतिक समाजीकरण के कई सिद्धान्त है —

- डेविड ईस्टन और जैक डेविस ने राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया को बृहत्तर रूप मे स्वीकार किया है। उनका उद्देश्य सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था की उपयोगिता का मूल्यांकन करना है। इसे बृहत्तर स्तरीय सिद्धान्त कहते है

जब राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया का केन्द्र समाज न होकर व्यक्ति हो तो उसे सूक्ष्म स्तरीय सिद्धान्त कहते है इसमे व्यक्ति की समाजीकरण की प्रक्रिया मे परिवार की भूमिका सर्वाधिक होती है। फ्रायड ने सर्वप्रथम इसका प्रयोग अपने अध्ययन मे किया है। माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य बच्चों की राजनीतिक समाजीकरण। सिखाते है।

व्यक्ति की आयु के अनुसार उसे नये नये दृष्टिकोणो, मूल्यो को समझने मे सहायता मिलती है। इसे बोध युक्त विकास सिद्धान्त कहते है

राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार है — 1. व्यक्ति मे राजनीतिक समुदाय के प्रति आस्था पैदा करना 2. व्यक्ति को राजनीतिक समाज का सक्रिय सदस्य बनाना 3. व्यक्तियो की शासन व्यवस्था के प्रति निष्ठा पैदा करना 4. राजनीतिक प्रणालियों, संस्थाओं को बनाये रखना उसमे परिवर्तन और विकास करना।

Scanned with CamScanner